पेज 12 का शेष..

सेवा ही जीवन...

अनुभव कर रहा हूँ। क्या है मेरे पास मन्दिर में रहता हूँ, एक बिस्तर है, एक प्लेट है। करोड़ों रूपये की योजना अपनायी, एक पैसा बैलेन्स नहीं। मेरा घर है गाँव में पैंतीस वर्ष से घर गया नहीं, मेरे तीन भाई है, भाई के बच्चों का क्या नाम है पता नहीं। सोने के लिए एक बिस्तर है खाने के लिए एक प्लेट है लेकिन मैं जीवन में आनन्द अनुभव कर रहा हूँ कितना आनन्द है। अरे लखपति-करोड़पति को जो आनन्द नहीं मिलता मैं जीवन में वो अनुभव कर रहा हूँ। कहाँ से मिलता है ये आनन्द बाहर से नहीं अन्दर से मिलता है ये आनन्द। बाहर ये आनन्द है, क्षणिक। परमात्मा शिव बाबा ने बताया जो आनन्द बाहर है वह आनन्द सही नहीं है। ये मुझे भी जब पता चल गया तो मैंने छब्बीस वर्ष की आयु में निर्णय किया कि जो आनन्द मिलता है वो सेवा से मिलता है, इसलिए मैंने आपकी सेवा को नमन किया कि सेवा में आनन्द है, सेवा से जीवन में सफलता है। मैने अपने जीवन में स्वामी विवेकानन्द की एक पुस्तक पढ़ी। परमात्मा शिव बाबा की भी मैंने कई पुस्तकें पढ़ी है, उनसे भी मुझे ऊर्जा मिल रही है। और मैंने तय किया कि मेरा पूरा जीवन मेरे देश और देश की जनता के लिए समर्पण। खतरा लगने लगा कि अगर शादी कर लिया तो चूल्हा जलाने में सारा समय बीत जाएगा, इसलिए शादी नहीं करना। आज पचहत्तर वर्ष की उम्र हो गई, आज भी वही विचार है मेरा। कई बड़े-बड़े अवार्ड मुझे मिले ट्रस्ट को दे दिये और उससे जो ब्याज आता है उससे कई गरीब बच्चों की शादी करा दी। अगर उसमें से दस-बीस लाख रूपये मैंने भी रखे होते तो मुझे भी नींद के लिए गोलियाँ लेनी पड़ती। पचहत्तर साल की उम्र में इतना घूमना है, इतना घूमना है। अगले सप्ताह से मैं पूरे देश का भ्रमण करने वाला हूँ लेकिन पचहत्तर वर्ष की उम्र में ब्लड़ प्रेशर, डायबिटीज आदि कोई भी बीमारी नहीं, आनन्द में डूबा रहता हूँ। सुगर खाने वाले व्यक्ति से पूछो कितनी मीठी है तो कहता है बहुत मीठी है लेकिन जब सामने वाला व्यक्ति खाता है तब पता पड़ता है कितनी मीठी है, ऐसे आनन्द का है।

दिल से दिए सम्मान का आनंद

दादी और आप सबने मेरे जैसे फकीर का जो सम्मान किया एक बात तो आज मुझे अनुभव हो रही है कि राष्ट्रपति ने पद्मभूषण से मुझे सम्मानित किया। अमेरिका में, दक्षिणी कोरिया में कहाँ-कहाँ अवार्ड दिये। लेकिन उस समय जो आनन्द मुझे नहीं मिला वो आज मिल रहा है। कभी-कभी कई अवार्ड मैंने लेने से इन्कार कर दिये। अभी दिल्ली में पिछले साल एक करोड़ का अवार्ड घोषित हो गया लेकिन जब मैंने देखा वो संस्था ठीक नहीं, देने वाले का हाथ साफ नहीं। तो मैंने इन्कार कर दिया मुझे नहीं चाहिए एक करोड़। एक-एक लाख के तीन अवार्ड इन्कार कर दिये। पहले तो मैंने एक गाँव बनाया जिसमें चालीस शराब की भट्टी थी। आज सोलह साल हो गये उस गाँव में कोई गुटखा, बीड़ी-सिगरेट, खैनी की बिक्री नहीं। जिस गाँव में चालीस शराब की भट्टी थी, अस्सी प्रतिशत लोग भूखे थे कुछ नहीं किया बारिश के पानी को जमीन में रिचार्ज किया जमीन के वाटर लेवल को बढ़ाया। जिस गाँव में तीन सौ एकड़ जमीन के लिए एक फसल के लिए पानी नहीं मिलता था। आज पन्द्रह सौ एकड़ भूमि में दो फसलों के लिए पानी मिल रहा है। तो जैसे मैंने देखा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय महाराष्ट्र में तथा अन्य राज्यों में भी आपके भाई-बहन जो रूरल डेवलपमेंट में काम कर रहे हैं मुझे बड़ा हर्ष हो रहा है कि रूरल डेवलपमेंट में जो काम करते हैं। हमें दो काम जरूरी है मनुष्य जीवन सुखी और समाधानी करना है तो उनको पेट के लिए रोटी और रहने के लिए मकान, शिक्षा, आरोग्य जीवन, आवश्यक जरूरतें तो ये काम बहुत जरूरी है एक तरफ विकास और दूसरे विकास के साथ-साथ अन्तर्विकास। ये दो काम और उसके साथ-साथ विकास में जो भ्रष्टाचार रूकावट पैदा कर रहा है उसको रोकेगा। ये मेरी नकल यहाँ बैठे आप सब मत करो। ये बहुत कठिन है मैं ये अनुभव किया। जब मैंने मंत्री को पकड़ा, मंत्री बोलता है अन्ना हजारे भ्रष्टाचारी है, गुण्डा है। अन्ना हजारे ऐसा है, वैसा है, अपमान को पीना पड़ता है। जितनी पीने की शक्ति आप में होगी उतनी आचार-विचार की शक्ति बढ़ेगी, निष्कलंक जीवन। एयरकंडिशन में रहने वाले लोगों को नींद नहीं आती है रात को नींद की गोली लेकर सोते हैं क्यों जीवन में लगे दाग बेचैन करते हैं सोने नहीं देते। तो इसलिए हमें जो काम आगे लेकर जाना है।

अन्ना हजारे किचन का अवलोकन करते समय रोटी का स्वाद लेते हुए। साथ हैं ब्र.कु.निर्वैर, ब्र.कु.सुनंदा।

शांतिवन। डायमण्ड हॉल के सभागार में परमात्म अवतरण के अवसर पर दादी हृदयमोहिनी , ब्र.कु मुन्नी, ब्र.कु नीलु सभा में उपस्थित ब्रह्माकुमार भाई-बहनों के संग होली के मनाते हुए।

फल लगेंगे तो पत्थर भी पड़ेंगे

जैसे मैं करप्शन को मिटाने की मुहिम चलायी तो कई मंत्रियों ने इतनी बदनामी की, इतनी बदनामी की, गंदे लेख लिखे अखबार में, अपमान पीते गया कुछ फर्क नहीं पड़ा। मेरी विनती है यहां बैठे हुए भाई-बहनों से अच्छा कार्य करते समय आपके सामने कठिनाई आयेगी ये हमारी कसौटी है उससे घबराना नहीं। हमारे विषय में कोई कुछ बोलेगा, बोलने दो। मन को थकावट नहीं आने देना, मन को थकावट आना बहुत बड़ा दोष है। वो दोष नहीं बीमारी है, अच्छे कार्य में रूकावट आती है, अच्छे कार्य का विरोध होता है, अच्छे कार्य में निंदा होती है। अरे इतिहास है हमारे सामने देखो ना। आज संत ज्ञानेश्वर आनन्दी के नेतृत्व में नौ लाख लोग इकट्ठे होते हैं जयघोष चल रहा है। ज्ञानेश्वर के झूले में लोगों ने गोबर डाल दिया आप और हम कौन, किस डाल के पत्ते हैं? संत ज्ञानेश्वर की ये अवस्था थी, संत तुकाराम की पीठ पर लाठी टूट गई। संत एकनाथ के बदन पर लोगों ने थूका, महापुरूषों की ये हालत बनायी है। हम किस झाड़ के पत्ते हैं। ये प्रकृति का नियम है जिस पेड़ पर फल होते हैं उसी पर लोग पत्थर मारते हैं। जिस पेड़ पर फल ही नहीं है वहाँ कौन पत्थर मारेगा। खासतौर पर नीम के पेड़ पर इतने पत्थर नहीं पड़ते, जितने आम के पेड़ पर पड़ते हैं। ये प्रकृति का नियम है तो मेरी विनती है सब भाई-बहनों से कभी-कभी ऐसी मुश्किलात आ जायेगी। इससे घबराना नहीं। हमारा चरित्र अच्छा है, हमारे आचार-विचार सुन्दर है, हमारा जीवन निष्कलंक है। हमारे जीवन में त्याग है और अपमान पीने की शक्ति है। ये गुण है तो रक्षा करने के लिए परमात्मा शिव बाबा तुम्हारे पीछे खड़ा हो जाता है। जो आपका त्याग है वही समाज को नई दिशा देने का कार्य कर रहा है। मुझे विश्वास है परमात्मा बाबा की जो अपेक्षा थी वो पूरी होगी जरूर समय लगेगा। अभी हमारे भाई-बहन बोल रहे थे कि मैंने शादी नहीं किया, मैं बाल ब्रह्मचारी हूँ। अरे शादी करके चारदीवारी के अन्दर छोटा परिवार बनाना था क्योंकि चारदीवारी के परिवार के अन्दर जो कुछ भी है ये मेरा, ये मेरा, वो मेरा, वो मेरा। लेटरीन का डिब्बा भी गुम हो गया तो सिर पकड़ कर बैठ जाता है कहां गया। मोटर साइकिल लाता है, उसे माला पहनाता है गाँव में चक्कर लगाके दिखाता है कि मैं मोटर साइकिल लाया हूँ आनन्द मिलता है, पंक्चर हो गया तो पेड़ के नीचे माथा पकड़ कर बैठता है। वो आनन्द सही नहीं है यही मैं कहूँगा और जो आपने मेरे जैसे फकीर का सम्मान किया उसके लिए मैं आपका ऋणी रहूँगा।

ब्रह्माकुमारीज न्यायविद प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु.रमेश शाह ने कहा कि भारत को पुन: श्रेष्ठाचारी बनाने के लिए ब्रह्माकुमारी संस्था चरित्र निर्माण को आधार बनाकर स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन का कार्य कर रही है। इसे श्रेष्ठाचार की क्रांति कहें या पवित्रता की क्रांति कहें, इसमें पूरे भारत तो क्या पूरे विश्व को जुटाना होगा। परमात्मा द्वारा प्रदत्त आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग की शिक्षा से जब हम सभी पवित्रता का मार्ग अपनाएंगे तो सहज ही श्रेष्ठ दुनिया का निर्माण होगा।

अन्ना हजारे को रोटियां बनाने के लिए लगाई गई आधुनिक मशीन का अवलोकन कराते हुए ब्र.कु.भानु।